Dr. Raj Gopal
V.S.J.S. College Rajnagar
Philosophy Department

Basic Features of Indian Philosophy (Lecture-5)
भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ (व्याख्यान-5)

अद्वैत वेदान्त :- अद्वैत वेदान्त दर्शन में मोक्ष का अर्थ आत्मा का ब्रह्म में विलीन हो जाना है। आत्मा वस्तुतः ब्रह्म है, परन्तु अज्ञान से प्रभावित होकर वह अपने को ब्रह्म से पृथक समझने लगता है। यही बन्धन है। मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान से संभव है। मोक्ष को शंकर ने आनंद की अवस्था कहा है। आत्मा वस्तुतः मुक्त है। इसलिए मोक्ष का अर्थ प्राप्त हुई वस्तु को फिर से प्राप्त करना है - प्राप्तस्य प्राप्ति। मोक्ष का अर्थ यहाँ आत्मा की स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना है। बन्धन को शंकर ने प्रतीति मात्र माना है। मोक्ष प्राप्ति हेतु वेदांत दर्शन में साधन चतुष्टय के पालन का विधान किया गया है।

विशिष्टाद्वैत वेदान्त :- इस दर्शन में मुक्ति का अर्थ ब्रह्म से मिलकर एकाकार हो जाना नहीं है बल्कि ब्रह्म के सादृश्य प्राप्त करना है। मोक्ष दुःख के अभाव की अवस्था है। इसके लिए इस दर्शन में प्रपत्तिमार्ग एवं भक्तिमार्ग भोग साधना की विभिन्न पद्धतियाँ हैं। इससे चित्त की शुद्धि होती है। इस दर्शन में मोक्ष प्राप्ति हेतु ईश्वर की कृपा आवश्यक है। मोक्ष भक्ति के द्वारा संभव होता है, जो ज्ञान और कर्म से उदय होता है।

भारतीय दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति की चर्चा की गयी है। (i) जीवन मुक्ति (ii) विदेह मुक्ति। जीवन मुक्ति का अर्थ है जीवन काल में मोक्ष को अपनाना

Scanned with CamScanner

विदेह मुक्ति का अर्थ है मृत्यु के पश्चात शरीर के नाश हो जाने पर मोक्ष अपनाना। भारतीय विचारधारा में बौद्ध, जैन, सांख्य-योग और वेदांत (शंकर) में जीवन मुक्ति एवं विदेह मुक्ति दोनों को अपनाया है। जो दार्शनिक जीवन मुक्ति को अपनाता है वह विदेह मुक्ति को अवश्य मानता है। परन्तु जो विदेह मुक्ति को अपनाता है उसे जीवन मुक्ति अपनाना आवश्यक नहीं है। न्याय-वैशेषिक, मीमांसा और विशिष्टाद्वैत वेदान्त (रामानुज) सिर्फ विदेह मुक्ति में विश्वास करता है।

(5.) सभी भारतीय दर्शन में अज्ञान को दूर करने के लिए योग एवं आत्म संयम को अपनाता है। सभी भारतीय विचारक यह मानते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति तत्त्वज्ञान से होती है। भारतीय विचारक तत्त्वज्ञान एवं चित्तशुद्धि के लिए योग एवं आत्मसंयम की आवश्यकता पर बल देते हैं। बौद्ध दर्शन का अष्टांगिक मार्ग जो कि चतुर्थ आर्य सत्य में वर्णित है एक यौगिक पद्धति है। जैन दर्शन का (सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्राणि) भी एक प्रभावी योग पद्धति है। योग की विस्तृत व्याख्या योग दर्शन की अष्टांग योग मार्ग में है। अष्टांग मार्ग के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि। अद्वैत वेदान्त ज्ञानमार्ग के अधिकारी बनने के लिए साधनचतुष्टय का विधान करता है। वहीं विशिष्टाद्वैत वेदांत प्रपत्तिमार्ग एवं भक्तिमार्ग का विधान करता है। इस प्रकार ज्ञान प्राप्ति हेतु सभी दर्शनों में शरीर मन एवं वचन की साधना पर जोर दिया गया है। अतः भारतीय दर्शन में जितना ध्यान ज्ञान पक्ष पर दिया गया है उतना ही ध्यान कर्म पक्ष भी दिया गया है। अतः भारतीय विचारधारा में योग का महत्त्व प्रमाणित है।

Scanned with CamScanner